Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X | Impact Factor
Peer Reviewed | Quarterly
Vol.4 No.17 | Oct-Nov-Dec 2019

साहित्य के शिल्पी: निराला

डॉ. अजय के. पटेल

सारांश:

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। भारतेंदू-द्विवेदी युग से जो खड़ी बोली साहित्य में अपना स्थान बनाते आ रही थी, उसे छायावादी दौर में द्रढ़ आधार मिला। गद्य के बाद अब कविता में भी वह 'मुख्य धारा' हो गयी। लेकिन इसके लिए छायावादियों को अथक श्रम और संघर्ष करना पड़ा। पंत, निराला, प्रसाद, महादेवी वर्मा सबका इसमे अपना-अपना योगदान रहा है; समानता के साथ इनमे भिन्नता भी रही है; सबकी अपनी अपनी दृष्टि थी;अलग अलग परिस्थितियाँ थीं, जिसमे रहकर वे अपना रचनाकर्म कर रहे थे। छायावाद नए दौर की आवाज़ थी; इसमे बंधनो से मुक्ति की छटपटाहट है वह तत्कालीन औपनिवेशिक शासन से मुक्ति की छटपटाहट भी है। छायावाद के आधार स्तंभों में निराला की केन्द्रीयता रही है; समय ने यह सिद्ध कर दिया है।

मुख्य शब्द: गद्य-पद्य साहित्य, छायावाद, कवि, युगद्रष्टा, उपन्यासकार।

प्रस्तावना:

निराला का गद्य एक ओर वाद-विवाद में जूझने वाले कुशल तार्किक और व्यंग्य लेखक का गद्य है, दूसरी ओर उसमें कवि सुलभ चित्रमयता, भाव- गाम्भीर्यता के भी दर्शन होते हैं । चित्रमयता, अर्थवक्रता और भाव - सघनता के कारण निराला के गद्य का ऊँचा स्थान है ।सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी छायावादी कवियों के चार स्तंभों में से एक थे। ये

भारत के एक प्रमुख हिन्दी कवि, लेखक, उपन्यासकार, निबंधकार, कहानीकार और अनुवादक थे। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिंदी साहित्य में एक प्रभावशाली शख्सियत हैं। इनके लेखन ने कवियों की पीढ़ियों को प्रेरित किया है और इनकी सुन्दरता, गहराई, आध्यात्मिकता और समाजिक प्रासंगिकता के लिए माना जाता है। छायावाद आंदोलन में इनके योगदान और अद्वितीय साहित्यिक लेखन विधा ने हिंदी भाषा के सबसे महत्वपूर्ण कवियों में से एक के रूप में इन्हें भी स्थान दिलाया।

सूर्यकांत त्रिपाठी जी भारत के एक प्रसिद्ध हिंदी कवि लेखक, उपन्यासकार, निबंधकार, कहानीकार और अनुवादक थे। और इन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य के अग्रदूतों में से एक माना जाता है और अक्सर इन्हें "निराला" कहा जाता है, जिसका अर्थ है- 'अद्वितीय'।

निराला का जीवन परिचय:

पण्डित कविवर 'निराला' का जन्म २१फरवरी, सन् १८९७ईस्वी में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। इनके पिता पण्डित रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के बैसवाड़ा क्षेत्र के जिला उन्नाव के गढ़ाकोला ग्राम के निवासी थे। और महिषादल राज्य में जाकर राजकीय सेवा में कार्य कर रहे थे। इनकी माता का नाम रुकमणी देवी था और जब सूर्यकांत त्रिपाठी जी ढाई वर्ष के थे तभी इनकी माता का देहांत हो गया था। और इनके पालन-पोषण का भार इनके पिता के कंधों पर आ गया था।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की प्रारंभिक शिक्षा महिषादल हाई स्कूल में संपन्न हुई। तथा संस्कृत बंगला और अंग्रेजी का अध्ययन इन्होंने घर पर ही किया। बचपन से ही निराला जी को कुश्ती, घुड़सवारी और खेलों में बहुत अधिक रूचि थी। और मात्र 14 वर्ष की अल्पायु में ही इनका विवाह मनोहरा देवी के साथ सम्पन्न हुआ। लेकिन वे भी शीघ्र ही इनमें साहित्यिक संस्कार जगाकर एक पुत्र और पुत्री का भार इनके ऊपर छोड़कर इस संसार से विदा हो गई। पुत्री सरोज जब बड़ी हुई तो इन्होंने उसका विवाह किया लेकिन थोड़े ही दिनों में उसने भी आंखें मूंद ली। निराला जी अपनी इस विवाहिता पुत्री के निधन से अत्यधिक क्षुब्ध हो उठे। निधन के इस विक्षोभ को इन्होंने अपनी रचना "सरोजस्मृति" में वाणी दी।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने प्रारंभ में अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए महिषादल राज्य में नौकरी की किंतु अपने स्वाभिमान से परिपूर्ण व्यक्तित्व के कारण उस सामन्ती वातावरण से ये सामंजस्य नहीं स्थापित कर सकें। जिसके फलस्वरूप वहां से अलग होकर इन्होंने कलकत्ता में अपनी रूचि के अनुरूप रामकृष्ण-मिशन के पत्र "समन्वय" और "मतवाला" का सम्पादन किया। 3 वर्ष बाद लखनऊ आकर 'गंगा पुस्तकमाला' का संपादन करने लगे तथा 'सुधा' के संपादकीय लिखने लगे।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी फक्कड़ और अक्खड़ स्वभाव के कारण इनकी यहां पर भी नहीं निभी और लखनऊ छोड़कर ये इलाहाबाद में रहने लगे। आर्थिक कष्ट भोगते हुए इन्होंने जनसाधारण के साथ अपने आप को एकात्मक कर दिया और प्रगतिशील काव्य

रचनाओं के साथ बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की। १५अक्टूबर, सन् १९६१ई.स. को प्रयागराज (इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश में इनका देहावसान हो गया था।

निराला का साहित्यिक परिचय:

महाकवि 'निराला' जी का उदय छायावादी कवि के रूप में हुआ। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ "जन्मभूमि की वन्दना" नाम की एक कविता की रचना करके किया। इन्होंने 'सरस्वती' और 'मर्यादा' पत्रिकाओं का निरंतर अध्ययन करके हिंदी का ज्ञान प्राप्त किया। "जुही की कली" नाम की एक कविता की रचना करके इन्होंने हिंदी जगत् में अपनी एक पहचान बना ली। छायावादी लेखक के रूप में प्रसाद, पन्त और महादेवी वर्मा के समकक्ष ही सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की भी गणना की जाती है। ये छायावाद के चार स्तंभों में से एक माने जाते हैं।

निराला की प्रमुख रचनाएं:

निराला जी बहुमुखी प्रतिभा के सम्पन्न साहित्यकार थे। कविताओं के अलावा इन्होंने उपन्यास, निबंध, कहानी, आलोचना एवं संस्मरण भी लिखे हैं। इनकी प्रमुख काव्य रचनाएं कुछ इस प्रकार से हैं – परिमल, अनामिका, गीतिका, तुलसीदास, अपरा, अणिमा, कुकुरमुत्ता, अर्चना, नए पत्ते, बेला, आराधना आदि। और कुछ गद्य रचनाओं में – लिलि, चतुरी चमार, अलका, निरुपमा, अप्सरा और प्रभावती आदि इनके श्रेष्ठ गद्य रचनाएं हैं।

निराला की भाषा शैली:

निराला जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध एवं परिमार्जित खड़ीबोली का प्रयोग किया है। भाषा में अनेक स्थलों पर शुद्ध तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया गया है जिसके कारण इनके भावों को सरलता से समझने में कठिनाई होती है। इनकी छायावादी रचनाओं में जहां भाषा की क्लिष्टता मिलती है वहीं पर इसके विपरीत प्रगतिवादी रचनाओं की भाषा अत्यन्त सरल, सरस एवं व्यावहारिक होती है। छायावाद पर आधारित निराला जी की रचनाओं में कठिन एवं दुरूह शैली तथा प्रगतिवादी रचनाओं में सरल एवं सुबोध शैलियों का प्रयोग देखने को मिलता है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक विशेषताएं:

आधुनिक चेतना के विद्रोहशील स्वरूप की सर्वाधिक और सबसे समर्थ अभिव्यक्ति निराला जी के काव्य में है। बंगभूमि में जन्म होने के कारण बंगला भाषा और उसके आधुनिक चेतना से ओत-प्रोत साहित्य का इन्हें भली प्रकार अध्ययन अनुशीलन का अवसर मिला। बंगाल के धार्मिक महापुरुषों – श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद आदि ने भी इन्हें प्रभावित किया। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की काव्य प्रतिभा का अभिनंदन करते हुए इन्होंने

अपने प्रारंभिक रचनाकाल में 'रवीन्द्र कविता कानन' की रचना की। किन्तु इनका व्यक्तित्व स्वयं महाप्राणा था, इसीलिए ये सभी प्रभाव इनके भीतर पूर्णतः समाहित हो गए।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की मातृभाषा हिंदी थी और उसके प्रति इनके मन में पर्याप्त अनुराग था। इसीलिए सरस्वती व मर्यादा आदि पत्रिकाओं के गंभीर अध्ययन के माध्यम से बंगला भाषियों के बीच रहते हुए भी इन्होंने हिंदी का अभ्यास किया और हिंदी में ही साहित्य का सृजन आरंभ किया।

निराला की रचनाएं एवं लेखन कार्य:

निराला जी ने लगभग सन् १९२०ई. में अपने लेखन कार्य की शुरुआत की। और इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन के प्रारंभ में 'जन्मभूमि की वंदना' नामक सबसे पहली कविता की रचना की थी। 'जुही की कली' नामक कविता की रचना करके इन्होंने हिंदी जगत् में अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। कविता के अलावा, निराला जी ने गद्य रचनाओं में भी प्रचुर मात्रा में लेखन कार्य किया है।

निराला की काव्यगत विशेषताएं:

निराला जी की स्वच्छंदतावादी काव्य कला का प्रमुख स्वरूप इनके "परिमल" काव्य-संग्रह की रचनाओं में दृष्टिगत होता है। इसमें हमें सौन्दर्य चेतना के मानवीय, प्रकृति परक और आध्यात्मिक सभी रूप देखने को मिलते हैं। अतीत के भी भावना और कल्पना से अनुरञ्जित अनेक भव्य और प्रेरणाप्रद चित्र हैं। उनका सहज संवेदनशील हृदय समाज के अनेक पीड़ितों और प्रपीड़ितों के प्रति सहानुभूति से परिपूर्ण हो उठा हैं। इसी अनुभूति को लेकर इनका विद्रोही मन सजग हो उठा है और बड़ी ओजस्वी शब्दावली में व्यक्ति, समाज और संपूर्ण देश को विप्लव के लिए आह्वान करने लगा है।इनके व्यक्तित्व के कोमल पक्ष का सहज अभिव्यंजना 'गीतिका' में है जिसके विभिन्न गीतों में बंगला के माध्यम से गृहीत पाश्चात्य संगीत के संविधान का उपयोग है।

विद्रोही-स्वर:

निराला जी ने अपने विद्रोहशील व्यक्तित्व को लेकर मन के प्रबल भावा वेग को जब वाणी दी तो छंद के बंधन सहज ही विच्छिन्न हो गए और मुक्त छंद का आविर्भाव हुआ। कविता का यह स्वच्छंद स्वरूप इनकी प्रथम रचना 'जुही की कली' से ही दृष्टत्य है। साहित्य का स्वच्छंदतावादी संविधान सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की रचनाओं में ही सबसे सशक्त रूप में प्रकट हुआ है। स्वच्छंदतावाद या छायावाद की मूलभूत प्रवृत्ति आत्मानुभूति के अंतरिक्ष स्पर्श से अलंकृत भाषा में अभिव्यक्त है जो मुक्त छंद के अतिरिक्त कभी-कभी गीत रूप भी ग्रहण करती है।

प्रकृति-चित्रण:

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में प्रकृति का सजीव एवं संश्लिष्ट चित्रांकन किया गया है। भारतीय संस्कृति के प्रति कवि के हृदय में पूर्ण अवस्था है। स्वदेश प्रेम के प्रचुर भाव भी उनके काव्य में मुखरित हुए हैं।

समापन :

निराला जी छायावाद के सुदृढ़ स्तंभों में से एक थे। उनकी कविताएं और साहित्यिक योगदान को आज भी याद किया जाता है और उन्हें हिन्दी साहित्य के महान् कवियों में से एक के रूप में स्मरण किया जाता है। अतः इस प्रकार छायावादी कवियों में सबसे अधिक विद्रोहशील, सर्वाधिक उदात्त और जनजीवन के प्रति विशेष रूप से 'निराला' जी को सजग और साहित्य के शिल्पी कहा जा सकता है।

संदर्भ सूची:

१. निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित) रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-२००२।

२. स्पेनिश फ्लूयानि जब मौत के तांडव ने दिया हिन्दी के महान कवि को जन्म, "निराला जयंती", ऋषभ प्रकाशन, २००८।

३. "हिन्दी साहित्य कोश, भाग - २, सं॰ धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी,पुनर्मुद्रित संस्करण-२०११, पृष्ठ-६५१।

४. निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ०-३९-४०।

५. निराला रचनावली, खण्ड-१, सं॰- नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-१९९८, पृ०-१९।

६. निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-२००२, पृ०-६०-६१तथा पृ०-४४०-४४१।